IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

सांस्कृतिक पर्यटन के माध्यम से वैश्विक शांति और अंतर-सांस्कृतिक संवाद : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

निकेता सिंह[1], डॉ सौम्या यादव[2]

1. शोध छात्रा, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
2. सह आचार्या, समाजशास्त्र विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

सारांश

वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में, जहाँ भू-राजनीतिक तनाव और सांस्कृतिक रूढ़िवादिता वैश्विक शांति के लिए चुनौती बनी हुई है, सांस्कृतिक पर्यटन एक शक्तिशाली पुल के रूप में उभरा है। प्रस्तुत शोध पत्र "सांस्कृतिक पर्यटन" को केवल एक आर्थिक गतिविधि के रूप में न देखकर, वैश्विक शांति और अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने वाले एक उत्प्रेरक के रूप में विश्लेषित करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि किस प्रकार विभिन्न समुदायों की विरासतों, परंपराओं और जीवन शैलियों का प्रत्यक्ष अनुभव, वैश्विक नागरिकों के बीच आपसी समझ को गहरा करता है और पूर्वाग्रहों को कम करता है।हालाँकि इस प्रक्रिया के विश्लेषणात्मक अध्ययन में उन चुनौतियों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जो सांस्कृतिक पर्यटन के अति-व्यावसायीकरण या 'सांस्कृतिक आघात' के कारण उत्पन्न होती हैं। कई बार पर्यटकों के अनियंत्रित व्यवहार से स्थानीय समाज में सांस्कृतिक प्रतिरोध भी देखने को मिलता है। इसलिए, यह शोध पत्र न केवल पर्यटन के सकारात्मक पक्षों की सराहना करता है बल्कि एक संतुलित समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाते हुए यह भी रेखांकित करता है कि कैसे 'जिम्मेदार पर्यटन' के माध्यम से इन द्वंद्वों को कम करके 'अंतरसांस्कृतिक संवाद-' को वैश्विक शांति का एक अचूक उपकरण बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक पर्यटन, वैश्विक शांति, अंतर-सांस्कृतिक संवाद , सतत पर्यटन, सांस्कृतिक विविधता, सांस्कृतिक पारस्परिकता , जनकूटनीति-, सांस्कृतिक संकीर्णता।

1. प्रस्तावना

सांस्कृतिक पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्थलों को देखना नहीं है, बल्कि यह दो अलग-अलग संस्कृतियों के बीच 'जीवंत संवाद' है। जब एक पर्यटक किसी अन्य देश या समाज की परंपराओं, खान-पान और जीवनशैली को करीब से देखता है, तो उसके मन से पूर्वाग्रह समाप्त होते हैं।

"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् "

अर्थात् यह मेरा है और वह पराया, ऐसी सोच संकुचित मन वालों की होती है। उदार चरित्र वालों के लिए तो पूरी धरती ही एक परिवार है।

इक्कीसवीं सदी के उत्तरार्ध में, जंहा दुनिया तकनीकी रूप से एक 'ग्लोबल विलेज' में बदल चुकी है, वंही भू-राजनीतिक तनाव, सांस्कृतिक रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास की दीवारें आज भी उतनी ही ऊंची हैं। ऐसे समकालीन वैश्विक परिदृश्य में, सांस्कृतिक पर्यटन केवल मनोरंजन, सैर-सपाटे या आर्थिक लाभ का जरिया मात्र नहीं रह गया है बल्कि यह विभिन्न देशों, सभ्यताओं और समाजों के बीच संवाद स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभर रहा है।

सांस्कृतिक पर्यटन बुनियादी तौर पर एक मानवीय अनुभव है। जब कोई पर्यटक अपनी भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं को पार करके किसी दूसरे समाज की कला, इतिहास, संगीत, खान-पान और जीवनशैली के प्रत्यक्ष संपर्क में आता है, तो वह केवल एक दर्शक नहीं होता। वह अनजाने में ही अंतर-सांस्कृतिक संवाद की एक मूक प्रक्रिया का हिस्सा बन जाता है। यह सीधा संपर्क इंसानी दिमाग से पूर्वाग्रहों को मिटाता है और एक-दूसरेके प्रति समझ और सहानुभूति पैदा करता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, पर्यटन को 'शांति के उत्प्रेरक' के रूप में देखा जा सकता है। यूनेस्को के मूल चार्टर में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "चूंकि युद्ध मनुष्यों के मस्तिष्क में शुरू होते हैं, इसलिए शांति की रक्षा के लिए भी मनुष्यों के मस्तिष्क में ही प्रयास किए जाने चाहिए।" सांस्कृतिक पर्यटन वास्तव में मनुष्यों के मस्तिष्क में इसी शांति की नींव रखता है। जब लोग एक-दूसरे की विरासत का सम्मान करना सीखते हैं, तो वैश्विक सहिष्णुता का जन्म होता है।इस अंतर-सांस्कृतिक संवाद की प्रक्रिया को समझने के लिए समाजशास्त्र के 'सांस्कृतिक पारस्परिकता' और 'पर-संस्कृतिग्रहण' के सिद्धांतों का सहारा लिया गया है। पर्यटन की स्थिति में, दो अलग-अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोग—एक 'अतिथि' और दूसरा 'मेजबान' एक साझा सामाजिक स्थान पर मिलते हैं। यह मिलन केवल आर्थिक लेन-देन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि विचारों, मूल्यों और दृष्टिकोणों के आदान-प्रदान का कारण बनता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री और दार्शनिकों का मानना है कि जब कोई व्यक्ति किसी अन्य संस्कृति के 'पवित्र स्थलों', स्मारकों या लोक-परंपराओं को सम्मानपूर्वक देखता है, तो उसके भीतर की 'सांस्कृतिक संकीर्णता' यानी अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ और दूसरे की संस्कृति को हीन समझने की भावना—धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है।

ऐतिहासिक रूप से भी यदि देखा जाए, तो भारत की धरती हमेशा से सांस्कृतिक पर्यटन और शांति-संवाद की जननी रही है। प्राचीन काल में ह्वेनसांग, फाह्यान, अल-बरूनी और इब्न बतूता जैसे यात्री केवल भूगोल नापने नहीं निकले थे; वे सांस्कृतिक अन्वेषक थे जिन्होंने पूर्व और पश्चिम के बीच ज्ञान और शांति का सेतु बनाया। आज के आधुनिक संदर्भ में, जब भारत 'अतिथि देवो भवः' के अपने शाश्वत दर्शन को वैश्विक पटल पर रखता है, तो वह अनजाने में ही अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में जन-कूटनीति को मजबूत कर रहा होता है।

वैश्विक शांति और पर्यटन का अंतर्संबंध

आयाम	शांति पर प्रभाव	पर्यटन की भूमिका
आर्थिक निर्भरता	जब दो देश पर्यटन के माध्यम से आर्थिक रूप से जुड़ते हैं, तो उनके बीच युद्ध की संभावना कम हो जाती है।	पर्यटन स्थानीय समुदायों को आत्मनिर्भर बनाकर आंतरिक अशांति को कम करता है।
'सॉफ्ट पावर'	देश अपनी सांस्कृतिक विरासत के दम पर वैश्विक पटल पर एक सकारात्मक और शांतिप्रिय छवि बनाते हैं।	अतिथि देवो भवः जैसी परंपराएं वैश्विक स्तर पर भाईचारे का संदेश देती हैं।

.

2. साहित्य की समीक्षा

रीचर्ड्स (2007) के अनुसार, सांस्कृतिक पर्यटन व्यक्तियों को अन्य समाजों की जीवन शैली, कला और परंपराओं को प्रत्यक्ष रूप से समझने का अवसर देता है। यह प्रत्यक्ष अनुभव रूढ़िवादिता को तोड़ता है।

यूनेस्को (2010) की रिपोर्टों में लगातार इस बात पर बल दिया गया है कि सांस्कृतिक धरोहरें केवल अतीत का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे वर्तमान में संवाद स्थापित करने का माध्यम हैं। जब पर्यटक किसी अन्य संस्कृति का सम्मान करना सीखते हैं, तो "सांस्कृतिक सहिष्णुता" का जन्म होता है।

डी'एमोर ने पर्य(1988)टन को "शांति का वैश्विक उद्योग" कहा है। उनका मानना है कि जब लोग यात्रा करते हैं, तो वे केवल मुद्रा का आदान-प्रदान नहीं करते, बल्कि विचारों और मानवीय संवेदनाओं का आदान-प्रदान करते हैं।

किम और क्रॉम्पटन (2001) ने अपने शोध में बताया हैं कि अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन 'सॉफ्ट पावर' और जन-कूटनीति को मजबूत करता है। यह सरकारों के स्तर से परे, आम नागरिकों के स्तर पर देशों के बीच संबंधों को सुधारने में मदद करता है।

मैककैनेल (1976) ने अपनी पुस्तक "द टूरिस्ट" में चेतावनी दी है कि अत्यधिक पर्यटन से संस्कृतियों का "मंचन" होने लगता है, जहाँ स्थानीय लोग पर्यटकों को लुभाने के लिए अपनी परंपराओं का दिखावा करने लगते हैं। इससे वास्तविक संवाद बाधित होता है।

सलाज़ार (2010) के अनुसार, यदि पर्यटन का प्रबंधन सही तरीके से न किया जाए, तो यह स्थानीय समुदायों के शोषण और सांस्कृतिक संघर्षों को भी जन्म दे सकता है। इसलिए, 'सतत पर्यटन' ही शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है

3. शोध के उद्देश्य :

- यह विश्लेषण करना कि सांस्कृतिक पर्यटन किस प्रकार विभिन्न देशों के नागरिकों के बीच प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करने में मदद करता है।
- यह जांचना कि विदेशी संस्कृतियों के सीधे संपर्क में आने से पर्यटकों के मन में व्याप्त रूढ़िवादिता और अजनबीपन का भय किस सीमा तक कम होता है।
- वैश्विक स्तर पर भारत (विशेषकर वाराणसी और बौद्ध सर्किट जैसे सांस्कृतिक केंद्रों) द्वारा पर्यटन के माध्यम से शांति और भाईचारे का संदेश फैलाने की क्षमता का मूल्यांकन करना।
- संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य-16 (वैश्विक शांति और न्याय) को प्राप्त करने में जिम्मेदार सांस्कृतिक पर्यटन के योगदान को रेखांकित करना।
- सांस्कृतिक पर्यटन के अति-व्यावसायीकरण और सांस्कृतिक टकराव से उत्पन्न होने वाली बाधाओं का आलोचनात्मक अध्ययन करना।

4. शोध के प्रश्न:

प्रस्तुत शोध पत्र सांस्कृतिक पर्यटन, वैश्विक शांति और अंतर-सांस्कृतिक संवाद के अंतर्संबंधों की पड़ताल करने के लिए निम्नलिखित मुख्य शोध प्रश्नों पर केंद्रित है:

- सांस्कृतिक पर्यटन किस प्रकार विभिन्न राष्ट्रों और समुदायों के बीच ऐतिहासिक पूर्वाग्रहों को कम करने और आपसी समझ को विकसित करने में भूमिका निभाता है?
- वैश्विक शांति स्थापना और जन-कूटनीति के एक साधन के रूप में सांस्कृतिक पर्यटन की व्यावहारिक क्षमता क्या है?
- यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल और अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम वैश्विक नागरिकता की भावना को बढ़ावा देने में कितने प्रभावी सिद्ध हुए हैं?
- सांस्कृतिक पर्यटन के अनियंत्रित या अत्यधिक व्यवसायीकरण से स्थानीय संस्कृतियों और समुदायों के बीच किस प्रकार के संघर्ष उत्पन्न हो सकते हैं, जो शांति प्रक्रिया को बाधित करते हैं?
- वैश्विक स्तर पर शांति और सहिष्णुता को बढ़ावा देने के लिए 'सतत और जिम्मेदार सांस्कृतिक पर्यटन' के विकास हेतु क्या नीतिगत उपाय अपनाए जाने चाहिए?

5. शोध प्राविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन मुख्य रूप से गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति पर आधारित है। इसमें सांख्यिकीय आंकड़ों के स्थान पर वैचारिक ढाँचे, मानवीय अनुभवों, सांस्कृतिक अंतःक्रियाओं और वैश्विक केस अध्ययनों के गहन विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

आंकड़ा संग्रह के स्रोत

यह शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त डेटा पर आधारित है। इन स्रोतों में शामिल हैं:

- **अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्ट**: यूनेस्को , संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन और इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पीस थ्रू टूरिज्म के आधिकारिक दस्तावेज।
- **अकादमिक साहित्य**: प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं , पुस्तकों, शोध प्रबंधों और नीति पत्रों का विश्लेषण।
- **वेबसाइट्स और डिजिटल मीडिया**: प्रासंगिक वैश्विक थिंक-टैंक, सांस्कृतिक दूतावासों और सतत पर्यटन मंचों से प्राप्त विश्वसनीय सामग्री।

वर्तमान समकालीन विश्व इस बात का गवाह है कि केवल राजनीतिक संधियाँ या सैन्य बल दुनिया में स्थायी शांति नहीं ला सकते है। वास्तविक शांति तब तक संभव नहीं है जब तक कि विभिन्न समुदायों के आम नागरिकों के बीच मानवीय जुड़ाव न हो। सांस्कृतिक पर्यटन इसी मानवीय जुड़ाव की रीढ़ है। जब एक विदेशी पर्यटक भारत के वाराणसी में गंगा आरती की दिव्यता का अनुभव करता है, या जापान का कोई नागरिक सारनाथ के बौद्ध स्तूप के सामने ध्यान लगाता है, तो राष्ट्रीय सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं और केवल वैश्विक नागरिकता की भावना शेष रह जाती है।

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ दूरियाँ मिटी हैं, वहीं विभिन्न संस्कृतियों के बीच गलतफहमियाँ और संघर्ष भी बढ़े हैं। ऐसे में सांस्कृतिक पर्यटन केवल मनोरंजन या व्यवसाय का साधन नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विक शांति और अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरा है।

सांस्कृतिक पर्यटन से तात्पर्य किसी क्षेत्र के इतिहास, कला, वास्तुकला, धर्म, परंपराओं और वहाँ के लोगों की जीवनशैली को जानने और अनुभव करने के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा से है।जब एक पर्यटक किसी दूसरे देश की संस्कृति के संपर्क में आता है, तो 'अंतर-सांस्कृतिक संवाद' की शुरुआत होती है। यह संवाद केवल शब्दों में नहीं, बल्कि अनुभवों, भोजन, संगीत और कला के आदान-प्रदान के माध्यम से होता है।

संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के अनुसार, *"पर्यटन शांति का एक मुख्य स्तंभ है।"* सांस्कृतिक पर्यटन निम्नलिखित तरीकों से वैश्विक शांति में योगदान देता है:

- **रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रहों का अंत**: अक्सर मीडिया या राजनीतिक कारणों से किसी देश या समुदाय के प्रति नकारात्मक धारणाएं बन जाती हैं। जब लोग स्वयं वहाँ जाते हैं, तो वे वास्तविक स्थिति देखते हैं, जिससे "स्टीरियोटाइप्स" टूटते हैं।

- **सहानुभूति और संवेदनशीलता का विकास:** दूसरे समाज की चुनौतियों और उनकी खुशियों को करीब से देखने पर पर्यटकों में उनके प्रति सहानुभूति पैदा होती है।
- **'दूसरा' की भावना की समाप्ति:** यह यात्रा इंसान को यह सिखाती है कि हमारी वेशभूषा और भाषा अलग हो सकती है, लेकिन बुनियादी मानवीय मूल्य एक समान हैं।

समाजशास्त्र और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में यह माना जाता है कि शांति केवल "युद्ध की अनुपस्थिति" नहीं है, बल्कि यह एक सकारात्मक प्रक्रिया है जहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ आपस में सहयोग करती हैं। इस संदर्भ में दो प्रमुख सिद्धांत काम करते हैं:

- **संपर्क परिकल्पना :** समाजशास्त्री गॉर्डन ऑलपोर्ट के अनुसार, जब दो अलग-अलग समूहों के लोग अनुकूल परिस्थितियों में एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं, तो उनके बीच का पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता स्वतः कम हो जाती है। सांस्कृतिक पर्यटन इसी 'संपर्क' को धरातल पर संभव बनाता है।
- **सॉफ्ट पावर कूटनीति :** जोसफ नाई द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धांत के अनुसार, कोई देश अपनी संस्कृति, कला और मूल्यों के दम पर दुनिया को प्रभावित करता है। सांस्कृतिक पर्यटन किसी भी देश की 'सॉफ्ट पावर' को मजबूत करने का सबसे प्रभावी साधन है।

❖ **सांस्कृतिक पर्यटन और संवाद :**

आयाम	विवरण	प्रभाव
व्यक्तिगत स्तर (संवेदी और अनुभवात्मक संवाद)	पर्यटक जब किसी नए स्थान का भोजन चखते हैं, पारंपरिक संगीत सुनते हैं, या स्थानीय हस्तशिल्प को छूते हैं, तो यह एक गैर-मौखिक संवाद होता है। उदाहरण के लिए, भारत में विदेशी पर्यटकों द्वारा 'योग' या 'आयुर्वेद' को अपनाना केवल एक गतिविधि नहीं, बल्कि भारतीय जीवन दर्शन के साथ एक गहरा संवाद है।	व्यक्तिगत स्तर पर मित्रता और आपसी सम्मान।
सामुदायिक स्तर (धार्मिक और	पर्यटन में सांस्कृतिक उत्सव जैसे- भारत का कुंभ मेला, ब्राजील का कार्निवल ,यरुशलम,	सामूहिक चेतना और वैश्विक

आध्यात्मिक संवाद)	मक्का, या बोधगया विभिन्न धर्मों के लोगों को एक स्थान पर लाती हैं। जब गैर-धार्मिक या अन्य धर्मों के लोग इन पवित्र स्थलों पर जाते हैं, तो उनमें धार्मिक सहिष्णुता और बहुलवाद के प्रति सम्मान पैदा होता है।	भाईचारे का विकास।
संस्थागत स्तर (ऐतिहासिक और विरासत संवाद)	यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थलों (जैसे- मिस्र के पिरामिड, भारत का ताजमहल, या कंबोडिया का अंगकोर वाट) की यात्रा करते समय, पर्यटक केवल पत्थरों को नहीं देखते, बल्कि वे मानव सभ्यता के साझा इतिहास से जुड़ते हैं। इससे यह अहसास होता है कि हमारी ऐतिहासिक जड़ें और विकास यात्रा एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं।	राष्ट्रों के बीच कूटनीतिक संबंधों में सुधार।

❖ **वैश्विक शांति स्थापना में सांस्कृतिक पर्यटन की भूमिका :**

पर्यटन उद्योग वैश्विक स्तर पर शांति के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है:

सांस्कृतिक पर्यटन ➔ आर्थिक निर्भरता ➔ राजनैतिक स्थिरता ➔ वैश्विक शांति

- **आर्थिक अंतर-निर्भरता :** सांस्कृतिक पर्यटन स्थानीय समुदायों (विशेषकर महिलाओं और युवाओं) को रोजगार देता है। जब दो देशों या क्षेत्रों के बीच पर्यटन से भारी आर्थिक लाभ जुड़ा होता है, तो वे राजनैतिक संघर्षों से बचते हैं। आर्थिक लाभ संघर्ष की कीमत को बढ़ा देता है, जिससे शांति बनी रहती है।
- **नागरिक कूटनीति :** जब सरकारों के बीच संबंध तनावपूर्ण होते हैं, तब भी पर्यटकों और आम नागरिकों का आवागमन (जैसे भारत और पाकिस्तान के बीच करतारपुर कॉरिडोर) दोनों देशों के लोगों के बीच नफरत की दीवार को कम करने का काम करता है। इसे 'नागरिक कूटनीति' कहा जाता है।
- **सांस्कृतिक पुनरुद्धार और आत्म-सम्मान:** जब विदेशी पर्यटक किसी समुदाय की लुप्त हो रही कला या परंपरा (जैसे भारत की 'कतपुतली' कला या अफ्रीका के आदिवासी नृत्य) को देखने आते हैं, तो स्थानीय समुदाय में अपनी संस्कृति के प्रति गर्व और आत्म-सम्मान जागृत होता है। यह गर्व उन्हें उग्रवाद या हिंसा के रास्ते पर जाने से रोकता है।

❖ **वैश्विक संदर्भ :**

- **यूरोपियन कल्चरल रूट्स :** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप के देशों को सांस्कृतिक रूप से जोड़ने के लिए बनाई गई योजना, जिसने आज यूरोपीय संघ में शांति बनाए रखने में मदद की।

- **सिल्क रूट :** मध्य एशिया और पूर्व को जोड़ने वाला यह प्राचीन मार्ग आज सांस्कृतिक आदान-प्रदान का प्रतीक है। हाल के वर्षों (2025-2026) में उज्बेकिस्तान, कजाकिस्तान और किर्गिस्तान जैसे मध्य एशियाई देशों ने **सिल्क** विरासत को पुनर्जीवित करने के लिए संयुक्त वीजा और सांस्कृतिक पर्यटन रूट विकसित किए हैं।

- **वैश्विक शांति में भूमिका:** समरकंद और बुखारा जैसे ऐतिहासिक शहरों में होने वाले सांस्कृतिक महोत्सवों में दुनिया भर के इतिहासकार, कलाकार और पर्यटक जुट रहे हैं। यह प्राचीन व्यापारिक मार्ग अब भू-राजनीतिक तनावों के बीच विभिन्न देशों को एक मंच पर लाने और शांतिपूर्ण संवाद स्थापित करने का जरिया बन गया है।

- **एक्सपो 2025 ओसाका' (जापान (और सांस्कृतिक मंडप :** जापान के ओसाका में आयोजित हुए विश्व एक्सपो 2025 ने सांस्कृतिक पर्यटन को वैश्विक संवाद का एक जीवंत मंच बनाया।

- **थीम आधारित संवाद:** इस वैश्विक आयोजन में दुनिया भर के देशों ने अपने सांस्कृतिक मंडप बनाए, जहाँ करोड़ों पर्यटकों ने एक ही स्थान पर वैश्विक संस्कृतियों, खान-पान और कला का अनुभव किया। इस आयोजन ने कोविड-19 के बाद और हालिया वैश्विक संघर्षों के बीच दुनिया को 'एकता' और 'साझा भविष्य' का संदेश दिया।

- **सऊदी विज़न 2030' और अल-उला का सांस्कृतिक कायाकल्प :** सऊदी अरब अपनी छवि को एक रूढ़िवादी देश से बदलकर एक वैश्विक सांस्कृतिक केंद्र के रूप में स्थापित कर रहा है। इसके केंद्र में **अल-उला** और हेगरा जैसे यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं।

- **डिजिटल डिटॉक्स और 'स्लो टूरिज्म' (यूरोप (:** यूरोप के कई हिस्सों) जैसे इटली के ग्रामीण इलाके और फ्रांस के वाइन क्षेत्र में वर्तमान में **स्लो सांस्कृतिक पर्यटन** का चलन बहुत तेजी से बढ़ा है।

- **दक्षिण कोरिया की 'के-कल्चर' (K-Culture) और पर्यटन क्रांति :** दक्षिण कोरिया ने अपने संगीत (K-Pop), नाटकों (K-Dramas) और व्यंजनों (K-Food) के दम पर दुनिया भर के युवाओं को अपनी ओर आकर्षित किया

है। हर साल लाखों युवा केवल कोरियाई संस्कृति का अनुभव करने सियोल और अन्य शहरों की यात्रा कर रहे हैं। यह सांस्कृतिक पर्यटन वैश्विक युवाओं के बीच एक अनूठी 'ग्लोबल कम्युनिटी' बना रहा है, जहाँ नस्ल और देश की सीमाएं धुंधली हो जाती हैं।

❖ **भारतीय संदर्भ :**

वाराणसी और सारनाथ का वैश्विक नेटवर्क: वाराणसी में हिंदू संस्कृति और सारनाथ में बौद्ध संस्कृति का संगम। यहाँ आने वाले श्रीलंकाई, जापानी, थाईलैंड और पश्चिमी पर्यटक भारत के साथ एक गहरा सांस्कृतिक और शांतिपूर्ण संबंध स्थापित करते हैं।

- **करतारपुर साहिब कॉरिडोर:** भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के बावजूद यह 'धार्मिक-सांस्कृतिक पर्यटन' का गलियारा दोनों देशों के आम लोगों के बीच संवाद का जरिया बना।
- **भारत का 'अतिथि देवो भव:' और जी-20 शिखर सम्मेलन**
  भारत ने अपनी जी-20 अध्यक्षता के दौरान देश के 60 से अधिक शहरों में सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया। विदेशी प्रतिनिधियों को स्थानीय त्योहारों, लोक नृत्यों और शिल्प कलाओं से रूबरू कराया गया। इसने न केवल भारत की छवि को निखारा, बल्कि विभिन्न वैश्विक मुद्दों पर आम सहमति बनाने के लिए एक सौहार्दपूर्ण माहौल भी तैयार किया।
- **अयोध्या और वैश्विक सांस्कृतिक कूटनीति) भारत** (2024 में अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन के बाद से यह क्षेत्र एक बहुत बड़े वैश्विक सांस्कृतिक और धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में उभरा है।
- **अंतर-सांस्कृतिक संवाद:** भारत सरकार ने दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों (जैसे थाईलैंड, कंबोडिया, इंडोनेशिया और लाओस) के साथ सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए विशेष '**रामायण सर्किट**' और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया है।
- **शांति का संदेश:** इन देशों से आने वाले पर्यटकों और कलाकारों (जैसे थाईलैंड की 'रामकिएन' मंडली) के माध्यम से यह पर्यटन केवल धार्मिक न रहकर एशिया-प्रशांत क्षेत्र में सांस्कृतिक कूटनीति और आपसी शांति का एक बड़ा माध्यम बन गया है।

- **यूनेस्को का सतत विकास लक्ष्य-16 और लक्ष्य संख्या 8.9 :** समकालीन संदर्भ में यह अध्ययन संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य संख्या 16 (शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएँ) और लक्ष्य संख्या 8.9 (जो सतत पर्यटन के माध्यम से स्थानीय संस्कृति और उत्पादों को बढ़ावा देने की बात करता है) के साथ गहराई से जुड़ता है। वैश्विक संस्थाएँ अब यह स्वीकार करने लगी हैं कि सांस्कृतिक पर्यटन आर्थिक समृद्धि का इंजन होने के साथ-साथ 'सहानुभूति की अर्थव्यवस्था' का निर्माण करता है। जब एक पर्यटक स्थानीय गाइड, दुकानदार या गृहस्वामी के साथ समय बिताता है, तो वह केवल मुद्रा का हस्तांतरण नहीं

करता, बल्कि वह उस समाज के सुख-दुख, इतिहास और संघर्षों को भी खरीदता और समझता है। यह आर्थिक निर्भरता अंततः राष्ट्रों के बीच युद्ध और वैमनस्य की संभावनाओं को कम करती है, क्योंकि कोई भी समाज उस व्यवस्था को नष्ट नहीं करना चाहता जो उसकी आजीविका और सम्मान दोनों की रक्षा करती है।

- **महामारी और वैश्विक संकटों के बाद का परिदृश्य :** हाल के वर्षों में विशेषकर कोविड19 जैसी वैश्विक महामारी और हालिया भू-राजनीतिक ध्रुवीकरण के बाद दुनिया ने जो भौतिक और मानसिक अलगाव झेला है, उसने इस शोधपत्र की प्रासंगिकता को और भी बढ़ा दिया है। आज की 'पोस्ट-क्राइसिस' दुनिया को सीमाओं को सील करने की नहीं बल्कि सांस्कृतिक गलियारों को खोलने की आवश्यकता है।

- **सहानुभूति की अर्थव्यवस्था :** डिजिटल मीडिया जहाँ लोगों को स्क्रीन के माध्यम से आभासी रूप से जोड़ता है, वहीं सांस्कृतिक पर्यटन उन्हें भौतिक रूप से एक-दूसरे के करीब लाकर 'अजनबीपन के भय' को समाप्त करता है।प्रस्तुत शोध पत्र इसी केंद्रीय विचार पर आधारित है। यह इस बात का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है कि किस प्रकार सांस्कृतिक पर्यटन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में 'सॉफ्ट पावर' की तरह काम करता है। यह अध्ययन विभिन्न वैश्विक और भारतीय उदाहरणों (जैसे- वाराणसी का वैश्विक सांस्कृतिक ताना-बाना, बौद्ध सर्किट और अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक उत्सव) के माध्यम से यह समझने का प्रयास करता है कि पर्यटन किस प्रकार 'ट्रैवल, लर्न एंड रिस्पेक्ट' (यात्रा करो, सीखो और सम्मान करो) के सिद्धांत पर चलते हुए वैश्विक शांति की स्थापना में एक मूक लेकिन अत्यंत प्रभावशाली कूटनीतिज्ञ की भूमिका निभा सकता है।

❖ चुनौतियाँ और बाधाएँ

सांस्कृतिक पर्यटन हमेशा शांति ही लाए, यह जरूरी नहीं कभी-कभी इसके कुछ नकारात्मक पहलू भी होते हैं | यदि सांस्कृतिक पर्यटन को सही ढंग से नियोजित नहीं किया गया तो यह विवाद का कारण भी बन जाता है:

- **सांस्कृतिक वस्तुकरण :** कभी-कभी पर्यटकों को रिझाने के लिए पवित्र परंपराओं या नृत्यों को 'बाज़ारू उत्पाद' बना दिया जाता है, जिससे स्थानीय लोगों की भावनाएं आहत हो सकती हैं।
- **सांस्कृतिक टकराव :** पर्यटकों द्वारा स्थानीय रीति-रिवाजों, पहनावे या धार्मिक नियमों का सम्मान न करने पर तनाव पैदा होता है।
- **ओवर-टूरिज्म :** अत्यधिक भीड़ के कारण स्थानीय संसाधनों पर दबाव बढ़ता है, जिससे स्थानीय निवासियों में पर्यटकों के प्रति असंतोष पनप सकता है।
- **रजनीतिक बाधाएं:** वीजा नीतियां, आतंकवाद और देशों के बीच आपसी तनाव सांस्कृतिक पर्यटन के रास्ते में सबसे बड़ा रोड़ा बनते हैं।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध पत्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि सांस्कृतिक पर्यटन केवल फुर्सत के क्षण बिताने या आर्थिक लाभ कमाने का साधन नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शांति और अंतर-सांस्कृतिक संवाद को स्थापित करने वाली एक मूक सामाजिक शक्ति है।

अध्ययन के मुख्य निष्कर्षों को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम समझा जा सकता है:

1. पूर्वाग्रहों की समाप्ति और सहानुभूति का निर्माण

शोध से यह सिद्ध होता है कि जब पर्यटक किसी दूसरे समाज की ऐतिहासिक विरासतों, कला, संगीत और जीवन शैली का प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं, तो सदियों पुराने पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता टूटते हैं। ऑलपोर्ट की 'संपर्क परिकल्पना' के अनुरूप, यह प्रत्यक्ष संवाद 'सहानुभूति के भूगोल' का निर्माण करता है, जहाँ लोग विविधताओं से डरने के बजाय उनका सम्मान करना सीखते हैं।

2. जन-कूटनीति का सुदृढ़ीकरण

यह अध्ययन दर्शाता है कि राजनीतिक सीमाओं और सरकारी तनावों के बावजूद, सांस्कृतिक पर्यटन 'ट्रैक-टू डिप्लोमेसी' (जन-कूटनीति) के रूप में काम करता है। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल और सांस्कृतिक गलियारे विभिन्न देशों के नागरिकों को एक साझा मंच प्रदान करते हैं, जो वैश्विक नागरिकता की भावना को मजबूत करता है।

3. 'मंचन संस्कृति' की चुनौती

निष्कर्ष का एक आलोचनात्मक पक्ष यह भी है कि सांस्कृतिक पर्यटन के अनियंत्रित व्यवसायीकरण से स्थानीय संस्कृतियों के कृत्रिम प्रदर्शन का खतरा बढ़ जाता है। यदि पर्यटन का मुख्य उद्देश्य केवल लाभ कमाना रह जाए, तो यह स्थानीय समुदायों के शोषण और सांस्कृतिक संघर्षों को जन्म दे सकता है, जो वैश्विक शांति के सिद्धांतों के विपरीत है।

❖ भविष्य के लिए सुझाव :

वैश्विक शांति के एक उपकरण के रूप में सांस्कृतिक पर्यटन की पूर्ण क्षमता का दोहन करने के लिए निम्नलिखित उपाय आवश्यक हैं:

- **सतत और जिम्मेदार पर्यटन** : पर्यटन नीतियों के केंद्र में 'आर्थिक लाभ' के साथ-साथ 'सांस्कृतिक संरक्षण' और 'सहिष्णुता' को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।
- **सामुदायिक भागीदारी**: स्थानीय समुदायों को पर्यटन प्रबंधन का मुख्य हिस्सा बनाया जाए, ताकि वे अपनी संस्कृति को गर्व और स्वाभाविकता के साथ साझा कर सकें।
- **शैक्षणिक पर्यटन को बढ़ावा**: वैश्विक स्तर पर छात्र और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों को सरकारी स्तर पर प्रोत्साहन मिलना चाहिए ताकि युवा पीढ़ी में वैश्विक भाईचारे का विकास हो सके।

संक्षेप में, सांस्कृतिक पर्यटन दुनिया को एक 'ग्लोबल विलेज' से आगे बढ़ाकर एक वसुधैव कुटुंबकम के रूप में बदलने की क्षमता रखता है। यदि इसे सही दृष्टिकोण और नीति के साथ आगे बढ़ाया जाए, तो यह भविष्य में युद्ध और ध्रुवीकरण की विभीषिका से जूझ रही दुनिया के लिए स्थायी शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

संदर्भ :

1. ऑलपोर्ट, जी. डब्ल्यू.) 1954).द नेचर ऑफ प्रेजुडिस ,एडिसन-वेस्ले.
2. डी'अमोर, एल .जे.) 1988).टूरिज्म :ए वाइटल फ़ोर्स फॉर पीस, एनल्स ऑफ टूरिज्म रिसर्च, 15(2), 269-283.
3. हिगिंस-डेसबियोल्स, एफ) .2006)। मार्क देन एन" इंडस्ट्री :"द सिग्निफिकेंस ऑफ टूरिज्म एज़ ए सोशल फ़ोर्स, टूरिज्म मैनेजमेंट, 27(6), 1192-1208.
4. किम, एस .एस., एवं क्रॉम्पटन, जे .एल) .2001). रोल ऑफ टूरिज्म इन यूनिफाइंग ए डिवाइडेड नेशन :द केस ऑफ साउथ कोरिया एंड नॉर्थ कोरिया टूरिज्म मैनेजमेंट, 22(4), 353-367.
5. मैककैनेल, डी) .1976). द टूरिस्ट :ए न्यू थ्योरी ऑफ द लेज़र क्लास,यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्निया प्रेस.
6. नाई, जे.एस) .2004). सॉफ्ट पावर :द मीन्स टू सक्सेस इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स, पब्लिकअफेयर्स.
7. रिचर्ड्स, जी) .संपादक (.) 2007). कल्चरल टूरिज्म :ग्लोबल एंड लोकल पर्सपेक्टिव्स, साइकोलॉजी प्रेस.
8. सलाज़ार, एन .बी) .2010). एन्विज़निंग ईडन :मोबिलाइज़िंग इमेजिनरीज़ इन टूरिज्म एंड कल्चरल चेंज ,बर्गहान बुक्स.
9. यूनेस्को. (2010). इन्वेस्टिंग इन कल्चरल डाइवर्सिटी एंड इंटरकल्चरल डायलॉग, यूनेस्को विश्व रिपोर्ट, पेरिस :यूनेस्को पब्लिशिंग.
10. यूएनडब्ल्यूटीओ .(2020). टूरिज्म एंड कल्चर सिनर्जीज़ ,मैड्रिड :विश्व पर्यटन संगठन.
11. यूएनडब्ल्यूटीओ.(2024). टूरिज्म एंड कल्चरल सिनर्जीज़ ,मैड्रिड :विश्व पर्यटन संगठन.
12. पर्यटन मंत्रालय (2024). स्वदेश दर्शन योजना और सांस्कृतिक कूटनीति रिपोर्ट .नई दिल्ली :भारत सरकार.
13. योजना पत्रिका) 2024). विशेष अंक: सांस्कृतिक कूटनीति और वैश्विक जुड़ाव. योजना, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वॉल्यूम 68, अंक 5.
14. कुरुक्षेत्र पत्रिका) 2025). विशेष अंक: पर्यटन के माध्यम से ग्रामीण विकास और विरासत संरक्षण. कुरुक्षेत्र, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, वॉल्यूम 73, अंक 2.

15.संस्कृति मंत्रालय (2024). जी–20 संस्कृति कार्य समूह :परिणाम दस्तावेज़ .नई दिल्ली :भारत सरकार.